Research maGma

(An International Multidisciplinary Journal)

UGC Approved Journal No: 63465

Editor in Chief
Dr. Sanjay Kumar Singh

Associate Editor
Dr. T. Manichander

Research maGma

Research maGma is a multidisciplinary research journal, published monthly in all Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed .

Our Editorial Board

Dr Anil Kumar S.

Dr. Gatade Dattatraya Ganapati

Dr. Prashant Thote

Dr. Deepa Viswam

Dr. Anamika Kumari

Smt. B.S.Gunarekha

Dr. P. Samuel

Dr. Pargat Singh Garcha

Dr. M. Abdul Jamal

Dr. Tapas Pal

Dr. Gardi Balu Pandurang

Dr. Dnyaneshwar Babulal Shirode

Dr. Ashokkumar B. Surapur

Dr. N. Sasikumar

Dr. Saykar Satish Govind

Dr. A. Paul Albert

Dr. Atul Hansraj Salunke

Mr. Sanjeev Kumar Mishra

Dr. Neeta Sukhendrapal Singh

Dr. Kispotta Seraphinus

Dr. Santosh Kumar Behera

Dr. Sandhya Ayaskar

Dr. S. Aravind

Dr. Sandeep V. Binorkar

Dr. Raval Sandeep Krishnat

Dr. Mahesh Nawria

Dr. Tamanna Kaushal

Dr. Deepak B. Nale

Dr. Ram Chander

Dr. Sudhir Kumar Jena

Dr. S Maxwell Lyngdoh

Dr. Bhed Pal Gangwar

Dr. Shaikh Fahemeeda

Dr. Deshai Rajesh Bhaurao

Research maGma
An International Multidisciplinary Journal
ISSN- 2456-7078 IMPACT FACTOR- 4.520
VOL-1, ISSUE-10, DEC-2017

शिक्षक शिक्षार्थी की दृष्टि में छात्र-असंतोष

डॉ. अनुभा शुक्ला
असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय,सिंगरामऊ, जौनपुर

सारांश

शिक्षा जगत् में छात्र.असंतोष की समस्या दिन.प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। कई बार छात्रों के असंतोष की अभिव्यक्ति उग्र रूप धारण कर लेती है। अतः यह न केवल छात्रों एवं अध्यापकों के लिए गम्भीर समस्या बन गयी है, वरन् राष्ट्र के लिए भी एक चुनौती है।

छात्र.असंतोष की समस्या के केन्द्र.बिन्दु छात्र ही हैं। छात्रों के बाद यदि किसी का स्थान आता है तो वह है–अध्यापक, जिनका एक.दूसरे के साथ संपर्क बना रहता है। यही दोनों स्रोत ऐसे हैं, जो छात्र–असंतोष के कारकों पर प्रकाश डाल सकते हैं तथा तथ्य निरूपण कर सकते हैं।

मुख्य शब्द असंतोष–संतोष का अभाव, मानसिक अनुभूति–मन.संबंधी संवेदना, विद्वेषात्मक–विरोधात्मक, ध्वंसात्मक–नाश करने का भाव, संक्षोभ– उत्तेजन, असहिष्णु–असहनशील, वैश्वीकरण–स्थानीय वस्तुओं व घटनाओं को विश्व स्तर पर रूपान्तरण करने की प्रक्रिया।

प्रस्तावना :

असंतोष एक प्रकार की मानसिक अनुभूति है, जो चित्त में व्यग्रता, तनाव एवं संक्षोभ उत्पन्न कर देती है। यह संक्षोभ ही प्रतिक्रियात्मक व्यवहार को जन्म देता है। यह जहाँ एक ओर पारिवारिक संबंध, जातिगत वातावरण या सामाजिक व्यवस्था आदि पर निर्भर है, वहीं दूसरी ओर शैक्षणिक.संस्थाओं पर भी निर्भर करता है। समाज परिवर्तन काल में परस्पर संघर्षरत विभिन्न शक्तियाँ न केवल छात्र समुदाय को ही, बल्कि पूरे समाज को प्रभावित कर देती हैं।

यहाँ प्रश्न यह उठता है कि क्या असंतोष एक स्वाभाविक सामाजिक घटना है? विचार करने पर स्पष्ट होता है कि यह वास्तव में एक सामाजिक घटना है। इस असंतोष की दिशा सामाजिक व्यवस्था से तालमेल लेकर चलती है।

छात्र शक्ति के सर्वश्रेष्ठ प्रतीक हैं। वे अपने शक्ति को विविध प्रकार से प्रयोग में ला सकते हैं। वे व्यवस्था के विरुद्ध चुनौती का सामना करने में इसी शक्ति का संघर्ष के रूप में प्रयोग कर सकते हैं। तरूणाई आदर्शात्मक होती है और इसलिए अन्याय एवं दम्भ के प्रति सहज रूप से विद्वेषात्मक होती है। तरूणों का स्वभाव ही होता है कि वे संक्षोभ का अनुभव करने लगते हैं। यही संक्षोभ वहाँ वेगपूर्ण ध्वंसात्मक रूप में प्रस्फुटित हो उठता है, जहाँ स्वप्न साकार करने का किंचित मात्र भी अवसर उपस्थित होता है। अतः ऐसा सोचना अनुपयुक्त होगा कि युवा–असंतोष अत्यन्त ध्वंसात्मक एवं हानिप्रद है। वास्तव में जहाँ मान्यताओं में विषमता होती है, वहाँ विषमता के प्रति विद्वेष की भावना असंतोष को जन्म देकर समता स्थापित करने का प्रयास करती है।

छात्रों एवं युवा वर्ग में वर्तमान हिंसा.प्रवृत्ति एवं असंतोष भारत में ही नहीं, बल्कि विश्व में एक जटिल समस्या बनती जा

रही है। हम आज वैश्वीकरण के युग से गुजर रहे हैं, उसमें केवल यह नहीं रह गया है कि युवा समाज के प्रति असहिष्णु हो गया है या शिक्षा.व्यवस्था ही बहुत अनुपयुक्त हो गयी है, बल्कि यह कि शिक्षण.संस्थाओं के अंदर व बाहर जो भी दम्भ या आडम्बर विद्यमान हैं, उसको लेकर छात्र एक सोपानात्मक चुनौतियों का सामना कर रहा है। उनमें चिरन्तन मूल्यों और आदर्शों के प्रति अनास्था उत्पन्न हो गयी है। जीवन.दर्शन पुराना और बेमानी साबित हो रहा है।

छात्र–असंतोष की अभिव्यक्ति प्रायः अधिकारियों एवं छात्रों के बीच द्वन्द्व के रूप में होती है। इन द्वन्द्वों ने जितना रचनात्मक परिणाम दिया, उससे कहीं अधिक हानि भी पहुँचाया है। छात्र.आंदोलन दो रूपों में हमारे समक्ष आते हैं– एक शान्तिपूर्ण, दूसरा उग्र तथा एक लक्ष्ययुक्त, दूसरा लक्ष्यरहित। स्वरूप कोई भी हो, परन्तु वे होते हैं–शिक्षा जगत् के समक्ष एक चुनौती के रूप में ही। यह चुनौती समय .समय पर प्रदर्शित उग्र व्यवहारों के माध्यम से मुखरित होती है। शिक्षा.व्यवस्था, राजनीति, नैतिक.मूल्य, सामाजिक व्यवस्था, बेरोजगारी के प्रति विद्रोह व दिशाहीनता के कारण छात्रों में निराशा व आक्रोश ने घर बना लिया है। कौशल की कुशलता या विशेषीकरण में असफलता या कम उपलब्धता से छात्रों में तनावपूर्ण स्थिति उत्पन्न हो गयी है। तनाव व बेचैनी एक प्रकार की ऐसी शक्ति है, जो उन्हें निरन्तर उद्वेलित करती रहती है। वे वर्तमान परिस्थितियों के प्रति असहिष्णु हो उठते हैं एवं उसे बदल डालने का प्रयास करने लगते हैं। प्रदर्शन या उपद्रव भी इसी का परिणाम है। प्रश्न चाहे शिक्षा .व्यवस्था का हो या सामाजिक सुरक्षा का, छात्र एवं छात्राओं दोनों में असंतोष का घनघोर अँधेरा व्याप्त है।

औचित्य–

छात्र–असंतोष की समस्या को तभी क्षीण किया जा सकता है, जब छात्र असंतोष को उत्प्रेरित करने वाले घटकों का पता लगाया जाय तथा उनके निराकरणार्थ व्यावहारिक व रचनात्मक मार्ग को अनावृत्त किया जाय, जिससे छात्र उज्ज्वल भविष्य के निर्माण के साथ एक स्वस्थ सामाजिक परम्परा के संवाहक भी बन सकें। विचार करने पर ज्ञात होता है कि व्यावहारिक संगति का आधार सामाजिक सदस्यों का प्रतिमान होता है। उसी से मान्यताएँ निशिचित होती हैं। कर्तव्य–अकर्तव्य का निर्णय भी इसी से होता है। अतः छात्रों के असंतोष के कारणों की खोज उन विभिन्न शैक्षिक–सामाजिक व्यवस्थाओं, मूल्यों एवं प्रतिमानों के अन्तर्गत ही किया जाना समीचीन है, जिससे वे छात्र किसी न किसी रूप में सक्रिय या निष्क्रिय रूप से सम्बद्ध हैं।

छात्र–असंतोष की समस्या जितनी गहराई से छात्र समझ सकते हैं, अध्यापक भी उतनी ही गहराई से उसे समझा सकते हैं। अध्यापक शिक्षा. व्यवस्था के स्तंभ के रूप में होते हैं, जो कि छात्रों के सीधे सम्पर्क में रहते हैं। साथ ही वे शिक्षा.पद्धति के मुख्य अंग भी हैं। शिक्षा–व्यवस्थाजनित असंतोष की दृष्टि से विचारणीय है कि छात्र–असंतोष के लिए आज की निम्न परिस्थितियाँ कितनी प्रासंगिक हैं ?

उद्देश्य–

1. वर्तमान समय की शिक्षा.प्रणाली उत्तरदायी है।
2. शिक्षा.व्यवस्था त्रुटिपूर्ण है।
3. शिक्षा उद्देश्यपूर्ण नहीं है।
4. राष्ट्र की एक लक्ष्य केन्द्रित शिक्षा–प्रणाली नहीं है।
5. छात्रों की शक्ति रचनात्मक कार्यों में नहीं लग रही है।
6. संचार.व्यवस्था द्वारा छात्रों में असंतोष की भावना का संचरण होता है।
7. अध्यापकों की अपेक्षा छात्रों में राजनीतिक जागरुकता अधिक है।
8. पुराने मूल्य बदल गये हैं, उसकी जगह नये मूल्यों का सर्जन नहीं हो रहा है।
9. बलवती इच्छा और प्रयास में भिन्नता है।
10. नयी पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी के बीच वैचारिक, व्यावहारिक एवं भावात्मक मतभेद बढ़ गया है।

विधिपरक विज्ञान–

प्रस्तुत अध्ययन सर्वेक्षणात्मक. विधि से पूर्वी उत्तर प्रदेश के विश्वविद्यालयों तथा विभिन्न महाविद्यालयों के विविध विभागों के सौ छात्रों (छात्रों एवं छात्राओं), सौ अध्यापकों (महिला एवं पुरुष) का प्रतिनिधित्व न्यादर्श के रूप में आ जाय, यह प्रयास किया गया। उनसे वार्ता करके यह स्थिर कर लिया गया कि इन छात्रों और अध्यापकों में से कौन–कौन से ऐसे व्यक्ति हैं, जो चिन्तक विचारक या उद्बुद्ध प्रकार के व्यक्ति हैं और छात्रों की समस्याओं में रूचि रखते हैं तथा उनके प्रति जागरुक हैं। इसी विशेष बिन्दु को लेकर अध्ययन करने में कभी–कभी कठिनाई यह रहती है कि जिनसे उत्तर प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है, वे अभिव्यक्ति में संकोच करते हैं। ऐसे में उन्हें निर्भय करने में श्रम करना पड़ता है। इसलिए कुछ ही उत्तरदाताओं के उत्तरों तक सीमित रहना पड़ता है। छात्र–असंतोष के कारकों का अध्ययन करने के लिए प्राथमिक तथ्य संकलन हेतु प्रश्नों से युक्त अनुसूची के सहयोग से साक्षात्कार पद्धति का अनुसरण करते हुए संभावित कारणों की जानकारी इस अध्ययन को पूर्ण करने की दृष्टि से की गयी है।

इसके साथ ही विभिन्न पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं में विचारकों के विचारों का भी सहारा लिया गया है।

विश्लेषण तथा व्याख्या–

प्राप्त प्रदत्तों से यह स्पष्ट हुआ कि आज की प्रचलित शिक्षा.व्यवस्था में अनेक दोष विद्यमान हैं, जो छात्रों के असंतोष को अंकुरित कर उसे विशालता प्रदान कर देते हैं। 91 प्रतिशत छात्रों तथा 89 प्रतिशत अध्यापक वर्तमान शिक्षा व्यवस्था से असंतुष्ट हैं। 89 प्रतिशत छात्र एवं 78 प्रतिशत अध्यापक दोषपूर्ण शिक्षा .प्रणाली को छात्र असंतोष उत्पन्न करने का कारक मानते हैं।
आज की शिक्षा में वास्तविक उद्देश्य उपाधि प्राप्त करना हो गया है। इस उपाधि प्रधानता के कारण छात्रों में असंतोष उत्पन्न हो गया है। ऐसा 95 प्रतिशत छात्र एवं 91 प्रतिशत अध्यापक मानते हैं। 86 प्रतिशत छात्र तथा 91 प्रतिशत अध्यापक यह मानते हैं कि विश्वविद्यालयीय शिक्षा छात्रों की उद्देश्य– पूर्ति नहीं कर पा रही है। यही कारण है कि छात्र–असंतोष फैल रहा है। 91 प्रतिशत छात्र एवं 93 प्रतिशत अध्यापक मानते हैं कि शिक्षणोपरान्त भविष्य की असुरक्षा, समुचित विकास एवं लक्ष्य का अभाव है, इसलिए छात्र असंतोष बढ़ रहा है। 94 प्रतिशत छात्र तथा 86 प्रतिशत अध्यापक यह स्वीकारते हैं कि शिक्षा प्राप्ति के अनन्तर आजीविका प्राप्ति के उचित अवसर का अभाव, यह दशा छात्र असंतोष उत्पन्न करता है। 82 प्रतिशत छात्र तथा 82 प्रतिशत अध्यापक वर्तमान शिक्षा.प्रणाली को लक्ष्य.केन्द्रित नहीं मानते हैं।

91 प्रतिशत छात्र एवं 99 प्रतिशत अध्यापक मानते हैं कि छात्रों की शक्ति रचनात्मक कार्यों में नहीं लग रही है, इससे छात्र असंतोष बढ़ रहा है। यह शिक्षा उत्तम नागरिक एवं पूर्ण व्यक्ति बनाने में अक्षम है।

73 प्रतिशत छात्र एवं 89 प्रतिशत अध्यापक यह मानते हैं कि चूँकि संचार व्यवस्था दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है और विभिन्न मीडिया तथा जन. संचार माध्यम छात्रों की समस्या के यथार्थ निराकरण के बजाय दलबंदी तथा संघर्ष को बढ़ावा दे रहे हैं, इसलिए छात्र असंतोष व्याप्त है। शिक्षण संस्थाओं में जो आर्थिक लाभ छात्रों को दिया जाता है उसके वितरण में धाँधली होती है, ऐसा 84 प्रतिशत छात्र तथा 86 प्रतिशत अध्यापकों का मानना है, इसको लेकर छात्र असंतोष का अनुभव करते हैं।

94 प्रतिशत छात्र एवं 98 प्रतिशत अध्यापकों का विश्वास है कि प्रशासन एवं अध्यापक में दलगत संघर्ष, पक्षपातपूर्ण व्यवहार स्वच्छ शिक्षा.व्यवस्था को कायम करने में अक्षम हैं। छात्रों में अध्यापकों से अधिक राजनीतिक जागरूकता है। छात्रों में दिशाहीनता के कारण असंतोष व्याप्त है।

73 प्रतिशत छात्र तथा 51 प्रतिशत अध्यापक वर्तमान मूल्य.व्यवस्था को अपने समाज के अनुकूल नहीं समझते हैं। केवल 20 प्रतिशत छात्र एवं 36 प्रतिशत अध्यापक ही इसे उपयुक्त समझते हैं। 50 प्रतिशत छात्र तथा 10 प्रतिशत अध्यापकों की दृष्टि में पुराने मूल्य हमारी अपेक्षाओं को पूर्ण नहीं कर पाते हैं। 89 प्रतिशत छात्र एवं 84 प्रतिशत अध्यापकों की दृष्टि में पुराने मूल्यों के बदलने तथा नये मूल्यों का स्वच्छ चित्र न होने से छात्र–असंतोष होने लगा है। नयी प्रथाओं का पालन 81 प्रतिशत छात्र ही आवश्यक मानते हैं। पुरानी प्रथाओं का पालन 91 प्रतिशत अध्यापक आवश्यक मानते हैं। स्पष्ट है कि नयी पीढ़ी की दृष्टि में नयी प्रथाओं का पालन का मूल्य अधिक है, जबकि पुरानी पीढ़ी की दृष्टि में पुरानी प्रथाओं के पालन का मूल्य अधिक है। यह विषमता छात्र–असंतोष के लिए एक स्वाभाविक कारक है।

100 प्रतिशत छात्र तथा 94 प्रतिशत अध्यापक यह मानते हैं कि अपने उपयुक्त रोजगार प्राप्ति तथा समाज में श्रेष्ठ स्थान प्राप्ति की बलवती इच्छा छात्र–असंतोष के लिए उत्तरदायी है। 88 प्रतिशत छात्र तथा 72 प्रतिशत अध्यापक निम्न.आर्थिक.स्तर तथा राजनीतिक अस्थिरता एवं कर्तव्यों का निर्वाह न कर पाना छात्र–असंतोष का कारण मानते हैं।

75 प्रतिशत छात्र यह कहते हैं कि नये पुराने रीति.रिवाजों पर उनके परिवार के सदस्यों में मतभेद है। 88 प्रतिशत छात्र तथा 80 प्रतिशत अध्यापक यह मानते हैं कि पुरानी पीढ़ी की नयी पीढ़ी से अपेक्षाओं में वृद्धि हो गयी है, लेकिन अपेक्षाओं की पूर्ति नहीं होने के कारण व्यवहारिक एवं भावात्मक मतभेद की समस्या उत्पन्न हो जाती है, जो छात्र–असंतोष को बढ़ावा देती है।

इस प्रकार समस्या चाहे शिक्षा.व्यवस्था से सम्बन्धित हो या सामाजिक एवं आर्थिक.व्यवस्था से या मूल्य परिवर्तन से, सभी में छात्र–असंतोष को उसे अंकुरित कर उसे विशालता प्रदान करने की प्रबल क्षमता है। यदि हम दोषपूर्ण शिक्षा.व्यवस्था की बात करते हैं तो इसमें शिक्षा से जुड़े सम्पूर्ण तथ्य आते हैं। जैसे उद्देश्युक्तता जो छात्र को उनके उपयुक्त अच्छा पद एवं स्थिति प्रदान कर सकें तथा उनकी क्षमताओं का समुचित प्रयोग कर सकें। उद्देश्य विहीनता से समय, धन व शक्ति नष्ट होती है। इसके साथ ही परीक्षा तथा अपेक्षित परिणाम का तनाव भी छात्रों में असंतोष कायम किया रहता है। शिक्षण माध्यम एवं विभिन्न समितियों का मनमाना आचरण छात्रों में असंतोष सृजित कर रहे हैं। आज जो भी संचार माध्यम है, उसमें विभिन्न मुद्दों पर भाषण एवं हिंसात्मक विग्रह को प्रदर्शित किया जाता है। जिससे छात्रों में उद्विग्नता, भटकाव तथा संशय की संभावना बढ़ जाती है। विभिन्न छात्र मुद्दों पर उत्तम दिशा.निर्देशन तथा मार्गदर्शन के बजाय राजनीतिक घुसपैठ का ही परिणाम है कि छात्र–उत्साह छात्र–असंतोष में परिणत हो जाता है।

उपसंहार-

वर्तमान शिक्षा वैशिष्ट्य प्रधान है। समग्र जीवन का अर्थ ढूढ़ने में तथा जीवन को सार्थक बनाने में अति मानसिक श्रम की आवश्यकता होती है। जब कभी भी हमें अपने जीवन को उत्कृष्ट बनाने में असफलता संभावित होते दिखने लगती है तो असंतोष व्याप्त हो जाता है। किसी विशेष क्षेत्र का विशेषीकरण जहाँ एक स्थान पर शतप्रतिशत उपादेय होती है, वहीं अन्य जगहों पर उसकी उपादेयता शून्य बन जाती है, यह स्थिति असंतोष को जन्म देती है। शिक्षा जगत् में छात्रों की पीढ़ियाँ नयी होती हैं एवं अध्यापकों, अधिकारियों तथा अभिभावकों की पीढ़ियाँ पुरानी होती हैं। मान्यताओं, निष्ठाओं, कार्यप्रणालियों तथा रहन–सहन एवं व्यवहार प्रतिमानों के संबंध में पुरानी पीढ़ियों की भावनाएँ कुछ और होती हैं, जबकि नयी पीढ़ियों की कुछ और। नयी पीढ़ी अंकुश से उत्तेजित हो उठती है और प्रतिक्रिया प्रारम्भ कर देती है।

यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि जहाँ व्यवहार प्रतिमान स्थापित करने के लिए अत्यधिक नियमों का निर्माण एवं आधुनिकी स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लगाने की प्रवृत्ति बढ़ती है, उससे प्रभावित होने वाला वर्ग असंतुष्टि का अनुभव करने लगता है। नयी पीढ़ी स्वभावतः अधिकाधिक स्वतंत्रता की इच्छुक होती है, नियंत्रण की अधिकता से विद्रोह पर आमादा हो जाती है। जिसमें सांवेगिक अस्थिरता है तथा शक्ति संयम ढीला है, वे आतंकपूर्ण सामूहिक हिंसात्मक व्यवहार की ओर खींच जाते हैं। अतः पीढ़ी संघर्ष मूल्यों एवं मान्यताओं के आपसी सामंजस्य न होने के कारण ही होता है। छात्रों की प्रतिक्रियाएँ प्रायः सार्वजनिक रूप से व्यक्त होती है, जिस पर उत्तरोत्तर राजनीतिक रंग चढ़ता जा रहा है। शैक्षिक.सुविधाओं के लिए छात्र अपनी माँगें सशक्त ढंग से पेश करते हैं, लेकिन किसी कारणवश यदि व्यवस्थाजनित लापरवाही उन्हें दृष्टिगत होती है तो वे अपनी असंतुष्टि व्यक्त करने लगते हैं।

पीढ़ी संघर्ष से इस चित्र का अर्थ यह कदापि नहीं है कि सारा दोष नयी पीढ़ी का ही है। समय की माँग पुरानी बातों को निरर्थक सिद्ध करके नयी आवश्यकता निर्धारित कर देती है। इसलिए पुरानी पीढ़ी को नयी पीढ़ी के मस्तिष्क के प्लेटफार्म पर स्थिर होकर उसे निरीक्षण एवं परीक्षण कर सकारात्मक ढंग से समझना होगा, तभी छात्र–असंतोष का रूपांतरण एक सहज मनोवैज्ञानिक वृत्ति के रूप में किया जा सकता है। वर्तमान समय अति गत्यात्मक है, इस तथ्य को ध्यान में रखकर ही शैक्षिक व्यवस्था तथा शिक्षा– प्रणाली में परिवर्तन किया जा सकता है। पुनर्निरीक्षण एवं पुनर्निर्माण तो सभी युग, समाज तथा राष्ट्र की माँग होती है; इससे यह होगा कि शिक्षा भी जड़ित न होकर गतिशील हो जायेगी। यदि पूरे राष्ट्र की शिक्षा एक ही केन्द्र से संचालित होगी तो भावनात्मक, ज्ञानात्मक तथा क्रियात्मक एकरूपता को प्रश्रय मिलेगा तथा राष्ट्रीय भावना को आघात नहीं पहुँचेगा। शिक्षा. व्यवस्था को अभिप्रेरणात्मक बनाना होगा, जिससे छात्र की प्रतिभाओं का उपयुक्त संरक्षण तथा संवर्धन हो सके।

संदर्भ ग्रन्थ सूची-

1. शैक्षिक निबंध : डॉ0 राम सकल पाण्डेय, पृष्ठ 220, विनोद पुस्तक मंदिर, आगराय 2001।
2. सामाजिक समस्याएं : राम आहूजा, पृष्ठ 175, रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली, तृतीय संस्करण–2016।
3. निबंध दृष्टि : डॉ0 विकास दिव्यकीर्ति एवं निशांत जैन, पृष्ठ 328, दृष्टि पब्लिकेशन, नई दिल्लीय 2017।
4. भारत की सामाजिक समस्याएँ मुद्दे और परिप्रेक्ष्य : डॉ. सुनील कान्त भट्टाचार्य, पृष्ठ 41, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्लीय 2004।

दैनिक समाचार पत्र-

1. हिन्दुस्तान, 26 सितम्बर 2016 पृष्ठ 10
2. हिन्दुस्तान, 7 अप्रैल 2017 पृष्ठ 13
3. अमर उजाला 9 अप्रैल 2017 विशेषांक मनोरंजन
4. हिन्दुस्तान, 15 अप्रैल 2017 पृष्ठ 12
5. हिन्दुस्तान, 3 नवम्बर 2017 पृष्ठ 6
6. हिन्दुस्तान, 14 नवम्बर 2017 पृष्ठ 12
7. अमर उजाला, 1 दिसम्बर 2017 पृष्ठ 6
8. दैनिक जागरण, 5, 6, दिसम्बर 2017 पृष्ठ 8